ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में व्यक्त दलित संवेदना : एक तुलनात्मक अध्ययन (कविता, नाटक और आत्मकथाओं के संदर्भ में)

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएच.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोधप्रबंध की रुपरेखा

शोधकर्ता

कृपेन्द्र रामचंद्र राठोड

एम.ए. (हिंदी), नेट/सेट

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ.रामरतन विट्ठलराव शिंदे

सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

विवेक वर्धिनी महाविद्यालय, देवणी जि.लातूर

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में व्यक्त दलित संवेदना : एक तुलनात्मक अध्ययन (कविता, नाटक और आत्मकथाओं के संदर्भ में)

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01	प्रास्ताविक	06
02	विषय चयन की प्रेरणा	06
03	अनुसंधान के उद्देश	07
04	अनुसंधान पद्धति	08
05	विषय की मौलिकता	08
06	विषय की व्याप्ति और सीमा	08
07	अंतरविद्याशाखीय संबंध	09
08	प्रकरण रुपरेखा	09
प्रथम अध्याय	**ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के दोनों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व** 1.1 प्रास्ताविक 1.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि का व्यक्तित्व 1.2.1 जन्म 1.2.2 माता-पिता 1.2.3 शिक्षा 1.2.4 नौकरी 1.2.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ 1.2.6 ओमप्रकाश वाल्मीकि का कृतित्व 1.2.7 काव्य 1.2.8 कहानी संग्रह 1.2.9 नाटक 1.2.10 आत्मकथा 1.2.11 पुरस्कार 1.3. डॉ.सिद्धलिंगैया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 1.3.1 जन्म 1.3.2 माता-पिता 1.3.3 शिक्षा	09

	1.3.4 नौकरी 1.3.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ 1.3.6 डॉ.सिद्धलिंगैया के कृतित्व 1.3.7 काव्य 1.3.8 नाटक 1.3.9 आत्मकथा 1.3.10 पुरस्कार	
द्वितीय अध्याय	**ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के दोनों का कविताओं का तुलनात्मक अनुशीलन** 2.1 प्रास्ताविक 2.2 आक्रोश और विद्रोह 2.3 भूख और गरीबी 2.4 वेदना 2.5 जल के लिए संघर्ष 2.6 रोटी कपड़े और मकान की समस्या 2.7 निचले स्तर का जीवन 2.8 जाती-भेद 2.9 आत्मसम्मान के लिए संघर्ष 2.10 प्रतिशोध की भावना	10
तृतीय अध्याय	**ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के दोनों का नाटकों का तुलनात्मक अनुशीलन** 3.1 प्रास्ताविक 3.2 अस्मिता को तलाशते दलित 3.3 अस्पृश्यता 3.4 स्त्री शोषण 3.5 हिंदू संस्कृति पर तीखा प्रहार 3.6 ईश्वर के प्रति अनादर की भावना 3.7 अंधविश्वास का विरोध 3.8 सामाजिक न्याय और समानता की माँग 3.9 सामाजिक व्यवस्था का विरोध	10
चतुर्थ अध्याय	**ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के दोनों का आत्मकथाओं का तुलनात्मक अनुशीलन** 4.1 प्रास्ताविक 4.2 गरीबी जीवन	11

	4.3 जाती-भेद के विरुद्ध संघर्ष 4.4 वर्ण व्यवस्था का विरोध 4.5 भूख मिटाने का संकल्प 4.6 धार्मिक अंधविश्वास का विरोध 4.7 समानता और बंधुत्व 4.8 सत्ता की माँग 4.9 सामाजिक बदलाव की अपेक्षा	
पंचम अध्याय	**ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में व्यक्त समस्याएँ** 5.1 प्रास्ताविक 5.2 सामाजिक समस्याएँ 5.2.1 जातीभेद की समस्या 5.2.2 असमानता 5.2.3 अस्पृश्यता 5.2.4 मानवीय सत्ता की स्थापना के लिए संघर्ष 5.2.5 अस्मिता की खोज 5.2.6 सामाजिक न्याय की समस्या 5.3 आर्थिक समस्याएँ 5.3.1 भूमिहीन जीवन 5.3.2 गरीबी एवं भूख 5.3.3 रोजी-रोटी के लिए संघर्ष 5.3.4 मूलभूत सुविधा से दूर 5.3.5 निचले स्तर का कामकाज 5.4. धार्मिक समस्याएँ 5.4.1 धार्मिक अन्धविश्वास 5.4.2 ईश्वर के प्रति गहरी आस्था 5.4.3 देवदासी प्रथा 5.4.4 धार्मिक और सार्वजनिक स्थलों पर प्रवेश निषेध 5.4.5 धार्मिक रुढ़ी परंपरा 5.5 शैक्षणिक समस्याएँ 5.5.1 शिक्षा से वंचित 5.5.2 पाठशाला जाने पर निषेध 5.5.3 मनुवाद का प्रभाव 5.6 राजनीतिक समस्याएँ 5.6.1 सत्ता से वंचित दलित	11

षष्ठम अध्याय	**ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य का शिल्पगत अध्ययन** 6.1 ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में भाषा 6.2 विद्रोह स्वर की भाषा 6.3 सहज और सरल भाषा 6.4 गाली-गलोज भाषा 6.5 गाँव की भाषा 6.6 वैचारिक भाषा 6.7 प्रश्नानुकूल भाषा 6.8 भावानुकूल भाषा 6.9 पात्रानुकूल भाषा 6.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में शैली 6.2.1 आत्मकथनात्मक शैली 6.2.2 वर्णनात्मक शैली 62.3 संवादात्मक शैली 6.2.4 व्यग्यात्मक शैली 6.2.5 भावात्मक शैली	13
सप्तम अध्याय	उपसंहार	13
	संदर्भ ग्रंथ सूची	14

ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ. सिद्धलिंगैया के साहित्य में व्यक्त दलित संवेदना : एक तुलनात्मक अध्ययन (कविता, नाटक और आत्मकथाओं के संदर्भ में)

▪ प्रास्ताविक

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की दुर्दशा ही साहित्यकार अपने साहित्य में संजोने का कार्य करते हैं। साहित्य मानव मन का दर्पण भी कहलाता है। इसलिए समाज के व्यक्तियों के प्रतिबिंब ही साहित्य में होता है। दलित वर्ग को शोषित वर्ग भी कहा जाता है। यह वर्ग सदियों से अपने अधिकारों से वंचित रहा है। दलित वर्ग से पशु की तरह व्यवहार किया गया है। उस वर्ग का दुःख, उपेक्षाएँ, त्रासदी, शोषण एवं अत्याचार का अध्ययन होना आवश्यक है। आज आधुनिकता के कारण मनुष्य ने अत्यधिक विकास तो कर लिया है लेकिन जिस तरह शरीर का एक अंग कमजोर होने से पूरा शरीर भी दुर्बल पड़ जाता है उसी तरह समाज का एक वर्ग वंचित रहने से देश भी उन्नति नहीं कर सकता है। हमारे देश एवं विश्व का इतिहास हमें बताता है कि बिना संघर्ष से हमें कुछ भी नहीं मिला है। संघर्ष में ही शक्ति है। ऐसे ही धैर्य एवं साहस से अपनी लेखनी चलाने वाले संघर्षशील क्रांतिकारी, समाज को सही दिशा दिखाने वाले लेखकों में ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया का नाम गर्व से लिया जाता है।

▪ विषय चयन की प्रेरणा

दलित साहित्य में मुझे शुरू से ही रुचि रही है। ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के दलित साहित्य सदैव मुझे आकर्षित किया है। उनके द्वारा लिखित कविता, नाटक और आत्मकथा में दलितों की पीड़ा, समस्याएँ, दर्द और संवेदनाएं उसके साथ-साथ गांव की बस्तियों का शोषण जिंदा चित्रण मुझे प्रेरित करता आया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'जूठन' जैसे आत्मकथाओं में इसका चित्रण बारीकी से किया है। दलितों के साथ भेदभाव, असमानता सदियों से हमारे समाज में रहा है। भारतीय समाज में दलितों से पशु प्राणियों की तरह व्यवहार किया जाता है। प्रस्तुत दोनों साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से दलित समाज को मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है। इन दोनों साहित्यकारों ने अपने साहित्य में ग्रामांचलिक जीवन. छोटे-छोटे गांव और आजादी के बाद भी जिस तरह से गांव से बाहर जो दलित बस्तियां बैठी हुई है वहाँ पर किस तरह का आज भी पुरानी रूढ़िग्रस्त परंपराओं से ग्रस्त उच्चवर्गीय लोगों से दलितों के साथ कैसे भेदभाव किया जाता है इसका चित्रण किया है। उनके द्वारा लिखे गए कविता, नाटक और आत्मकथा का आज बहुत सारे भाषाओं में भी अनुवाद किया जा रहा है। सरकार भी इस समुदाय को विशेष रूप से मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास कर रही है। इसलिए मैंने इन दोनों साहित्यकारों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए शोध विषय चयन किया है।

▪ अनुसंधान के उद्देश

- तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप एवं अवधारणा का अध्ययन करना।
- ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के कविता में व्यक्त दलित संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के नाटक में व्यक्त दलित संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के आत्मकथा में व्यक्त दलित संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में व्यक्त समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य का तुलनात्मक शिल्पगत अध्ययन करना।

▪ अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत विषय अनुसंधान में वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में विषय का वस्तुनिष्ठ और तथ्यात्मक पद्धति से अध्ययन किया जायेगा। इस अनुसंधान पर आधारित निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

▪ विषय की मौलिकता

प्रस्तुत शोध के पूर्व इस शीर्षक पर किसी ने भी और कहीं पर भी अनुसंधान नहीं किया है। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत विषय की अपनी मौलिकता है।

▪ विषय की व्याप्ति और सीमा

प्रत्येक शोधकार्य अपनी सीमा और व्याप्ति में सम्पन्न होता है। प्रस्तुत शोध के विषय को ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के कविता, नाटक और आत्मकथा आदि तक सीमित रखा गया है किन्तु इस साहित्य का सुक्ष्म और गहराई से अध्ययन करना यह शोध की व्याप्ति है।

▪ अंतरविद्याशाखीय संबंध

प्रस्तुत विषय साहित्य के साथ ज्ञान की अन्य शाखों के साथ भी अन्य रूप से जुड़ा हुआ है। वर्तमान साहित्य में यह विषय अहम भूमिका निभाता है। इस विषय के द्वारा समाज की वास्तविकता का अध्ययन किया जाने वाला है। ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के कविता, नाटक और आत्मकथा में व्यक्त हुई दलित संवेदना अध्ययन निश्चित ही उपयुक्त है। अतः स्पष्ट है कि अंतरविद्याशाखीय अध्ययन के दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन, अनुसंधान कार्य विशिष्ट महत्व रखता है।

शोधप्रबंध की रुपरेखा-

किसी भी शोध प्रबंध के निर्माण प्रक्रिया में रूपरेखा अहम होती है। अध्ययन के सुविधा हेतु मैंने अपने शोध प्रबंध का निम्नलिखित अध्यायों में विभाजन किया है।

प्रथम अध्याय - ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 प्रास्ताविक

1.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- 1.2.1 जन्म
- 1.2.2 माता-पिता
- 1.2.3 शिक्षा
- 1.2.4 नौकरी
- 1.2.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ
- 1.2.6 ओमप्रकाश वाल्मीकि का कृतित्व
- 1.2.7 काव्य
- 1.2.8 कहानी संग्रह
- 1.2.9 नाटक
- 1.2.10 आत्मकथा

1.2.11 पुरस्कार

1.3. डॉ.सिद्धलिंगैया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.3.1 जन्म

1.3.2 माता-पिता

1.3.3 शिक्षा

1.3.4 नौकरी

1.3.5 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.3.6 डॉ.सिद्धलिंगैया के कृतित्व

1.3.7 काव्य

1.3.8 नाटक

1.3.9 आत्मकथा

1.3.10 पुरस्कार

द्वितीय अध्याय-ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के कविताओं का तुलनात्मक अनुशीलन

2.1 प्रास्ताविक

2.2 आक्रोश और विद्रोह

2.3 भूख और गरीबी

2.4 वेदना

2.5 जल के लिए संघर्ष

2.6 रोटी कपड़े और मकान की समस्या

2.7 निचले स्तर का जीवन

2.8 जाती-भेद

2.9 आत्मसम्मान के लिए संघर्ष

2.10 प्रतिशोध की भावना

तृतीय अध्याय-ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के नाटकों का तुलनात्मक अनुशीलन

3.1 प्रास्ताविक

3.2 अस्मिता को तलाशते दलित

3.3 अस्पृश्यता

3.4 स्त्री शोषण

3.5 हिंदू संस्कृति पर तीखा प्रहार

3.6 ईश्वर के प्रति अनादर की भावना

3.7 अंधविश्वास का विरोध

3.8 सामाजिक न्याय और समानता की माँग

3.9 सामाजिक व्यवस्था का विरोध

चतुर्थ अध्याय-ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के आत्मकथाओं का तुलनात्मक अनुशीलन

4.1 प्रास्ताविक

4.2 गरीबी जीवन

4.3 जाती-भेद के खिलाफ संघर्ष

4.4 वर्ण व्यवस्था का विरोध

4.5 भूख मिटाने का संकल्प

4.6 धार्मिक अंधविश्वास का विरोध

4.7 समानता और बंधुत्व

4.8 सत्ता की माँग

4.9 सामाजिक बदलाव की अपेक्षा

पंचम अध्याय-ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के में साहित्य में व्यक्त समस्याएँ

5.1 प्रास्ताविक

5.2 सामाजिक समस्याएँ

5.2.1 जातीभेद की समस्या

5.2.2 असमानता

5.2.3 अस्पृश्यता

5.2.4 मानवीय सत्ता की स्थापना के लिए संघर्ष

5.2.5 अस्मिता की खोज

5.2.6 सामाजिक न्याय की समस्या

5.3 आर्थिक समस्याएँ

5.3.1 भूमिहीन जीवन

5.3.2 गरीबी एवं भूख

5.3.3 रोजी-रोटी के लिए संघर्ष

5.3.4 मूलभूत सुविधा से दूर

5.3.5 निचले स्तर का कामकाज

5.4. धार्मिक समस्याएँ

5.4.1 धार्मिक अन्धविश्वास

5.4.2 ईश्वर के प्रति गहरी आस्था

5.4.3 देवदासी प्रथा

5.4.4 धार्मिक और सार्वजनिक स्थलों पर प्रवेश निषेध

5.4.5 धार्मिक रुढ़ी परंपरा

5.5 शैक्षणिक समस्याएँ

5.5.1 शिक्षा से वंचित

5.5.2 पाठशाला जाने पर निषेध

5.5.3 मनुवाद का प्रभाव

5.6 राजनीतिक समस्याएँ

5.6.1 सत्ता से वंचित दलित

षष्ठम अध्याय-ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

6.1 ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में भाषा

6.2 विद्रोह स्वर की भाषा

6.3 सहज और सरल भाषा

6.4 गाली-गलोज भाषा

6.5 गाँव की भाषा

6.6 वैचारिक भाषा

6.7 प्रश्नानुकूल भाषा

6.8 भावानुकूल भाषा

6.9 पात्रानुकूल भाषा

6.2 ओमप्रकाश वाल्मीकि और डॉ.सिद्धलिंगैया के साहित्य में शैली

6.2.1 आत्मकथनात्मक शैली

6.2.2 वर्णनात्मक शैली

62.3 संवादात्मक शैली

6.2.4 व्यग्यात्मक शैली

6.2.5 भावात्मक शैली

सप्तम अध्याय- उपसंहार

उपसंहार में सभी अध्यायों का सारांश दिया जाएगा और इस शोध कार्य के निष्कर्ष बिंदुओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'जूठन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997

2) ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'जूठन', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

3) ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'सदियों का संताप', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995

4) ओमप्रकाश वाल्मीकि, 'दो चेहरे', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999

5) डॉ.सिद्धलिंगैया, 'उरु केरी', अंकिता प्रकाशन, बेंगलूर, 2018

6) डॉ.सिद्धलिंगैया, 'होले मादिगर हाडु', अंकिता प्रकाशन, बेंगलूर, 1998

7) डॉ.सिद्धलिंगैया, 'एकलव्य', अंकिता प्रकाशन, बेंगलूर, 2005

8) आचार्य रामचंद्र शुक्ल. 'हिंदी साहित्य का इतिहास' नागरिक प्रचारिणी सभा. काशी 1929

शोधकर्ता

कुपेन्द्र रामचंद्र राठोड

शोधनिर्देशक

प्रा.डॉ.रामरतन विट्ठलराव शिंदे

सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

विवेक वर्धिनी महाविद्यालय, देवणी जि.लातूर